विश्व नव निर्माण अनूठी ईश्वरीय योजना

शरीर अलग चीज है , आत्मा अलग चीज है और दोनों चीजें मिलकर जीव आत्मा बनती है–जीवित आत्मा। जीवित आत्मा माना शरीर के अंदर काम करने वाली अदृश्य शक्ति। नहीं तो ये आत्मा भी काम नहीं कर सकती। ये शरीर भी काम नहीं कर सकता। जिसकी मिसाल एक मोटर और ड्राइवर से दी हुई है। जैसे मोटर होती है , ड्राइवर उसके अन्दर है तो मोटर चलेगी। ड्राइवर नहीं है तो मोटर नहीं चलेगी। मतलब ये है कि आत्मा(भाई ने कहा–वायु है।) वायु नहीं है। पृथ्वी ,जल, वायु, अग्नि, आकाश ये तो पाँच तत्व अलग हैं जिनसे ये शरीर बना है। आत्मा निकल जाती है तो भी शरीर के अन्दर पाँच तत्व रहते हैं। उनको जलाया जाता है या मिट्टी में दबाया जाता है। वो तो जड़ तत्व है।लेकिन आत्मा उनसे अलग मन और बुद्धि स्वरुप एक अति सूक्ष्म ज्योतिर्बिन्दु है। जिसको गीता में कहा गया है ''अणोरणीयांसमनुस्मरेत् यः'' मतलब अणु से भी अणुरूप बताया। अणु है लेकिन ज्योतिर्मय है। वो ज्योतिर्मय अणु में मन, बुद्धि के अन्दर अनेक जन्मों के संस्कार भरे हुए हैं। मन, बुद्धि को ही आत्मा कहा जाता है। वेद की ऋचा में भी ये बात आई है, '' मनरेव आत्मा''। मन को ही आत्मा कहा जाता है। आदमी जब शरीर छोड़ता है, आत्मा शरीर छोड़ती है तो ये थोड़े ही कहा जाता है कि मन, बुद्धि रह गई और आत्मा चली गई। सब कुछ है लेकिन मन, बुद्धि की जो शक्ति है वो चली गई। माना आत्मा चली गई। तो मन, बुद्धि की जो पॉवर है, वास्तव में उसका दूसरा नाम आत्मा है। मन, बुद्धि में इस जन्म के और पूर्व जन्म के संस्कार भरे हुए हैं। संस्कार माना अच्छे बुरे जो कर्म किए जाते हैं उन कर्मों का जो प्रभाव बैठ जाता है उसको कहते हैं संस्कार। जैसे किसी परिवार में कोई बच्चा पैदा हुआ, कसाइयों का परिवार है, बचपन से ही वहाँ गाय काटी जाती है, उस बच्चे से, जब बड़ा हो जाय, पूछा जाय कि तुम गाय काटते हो बड़ा पाप होता है। तो उसकी बुद्धि में बैठेगा नहीं। उसके संस्कार ऐसे पक्के हो गये। उसी तरीके से ये संस्कार एक तीसरी चीज़ है। तो मन, बुद्धि और संस्कार ये तीन शक्तियाँ मिलकर आत्मा कही जाती हैं।

ये आत्मा इस सृष्टि में आई कहाँ से ? ये कीट, पशु, पक्षी पतंगे ये सब आत्मायें हैं। सबके अन्दर आत्मा है। तीन लोक के चित्र में ये है पृथ्वी, ये हैं सूरज, चाँद, सितारे, आकाशतत्व। गीता में एक श्लोक और है ,उसमें अर्जुन को भगवान ने ये बताया है कि मैं कहाँ का रहने वाला हूँ ? ''न तद् भासयते सूर्यो न शशाङ्को न पावकः। यद् गत्वा न निवर्तन्ते तद् धामो परमं मम।'' माना जहाँ सूरज, चाँद, सितारों का प्रकाश नहीं पहुँचता, जहाँ अग्नि का प्रकाश नहीं पहुँचता जहाँ चन्द्रमा का प्रकाश नहीं पहुँचता वो मेरा परे ते परे धाम है जहाँ का मैं रहने वाला हूँ। गीता का यह पूरा का पूरा श्लोक इस बात पर है कि परमात्मा कहाँ का रहने वाला है ? ये यहाँ साबित किया गया है कि पाँच तत्वों की दुनियाँ से परे एक और छठा तुरीया तत्व है "ब्रह्मलोक" जिसे अंग्रेजों में कहा जाता है "सुप्रीमएबोड"। मुसलमानों में इसे कहा जाता है "अर्श"। खुदा अर्श में रहता है फर्श में नहीं। लेकिन अब तो वो मुसलमान भी जर्रे–2 में सर्वव्यापी मानने लगे हैं। जैनी लोग उसको "तुरीया धाम" मानते हैं। माना हर धर्म में उस धाम की मान्यता है। वहाँ की हम सब आत्माएं रहने वाली हैं। वहाँ पर ही सुप्रीमसोल है जिसे हम हिन्दुओं में कहते हैं "शिव"। वो जन्म–मरण के चक्र से न्यारा है। बाकी सब जितनी भी आत्मायें हैं वो जन्म–मरण के चतुर्युगी चक्र में नं.वार आ जाती हैं। क्रम क्या है ? जितना ही श्रेष्ठ कर्म करने वाली आत्मा है वो उतना ही परे ते परे परमधाम में शिव के नज़दीक रहने वाली होगी और इस सृष्टि पर पहले2 आती है। जितने ही निष्कृष्ट कर्म करने वाली आत्मायें हैं , ऐसा पार्ट बजाने वाली हैं वो सब परमधाम में नीचे–नीचे की ओर स्थिर रहती हैं। उनकी संख्या जास्ती होती जाती है। दुष्ट कर्म करने वालों की संख्या जास्ती और श्रेष्ठ कर्म करने वाली देव आत्माओं , जो 33 करोड़ कही जाती हैं , उनकी संख्या कम। जिनकी संख्या परमधाम में ऊपर–ऊपर कम है वो श्रेष्ठ आत्माएं हैं।

जब आदि सतयुग से नई सृष्टि का आवर्तन होता है तो त्रेता थोड़ा पुराना हो जाता है। द्वापर थोड़ा और पुराना हो जाता है और कलियुग बिल्कुल ही पुराना हो जाता है। दुनियाँ की हर चीज़ चार अवस्थाओं से गुजरती है। सतोप्रधान बचपन, सतोसामान्य किशोर अवस्था , रजोप्रधान जवानी और तामसी बुढ़ापा। सृष्टि का भी यही नियम है। ये चार अवस्थाओं से पसार होती है।सतोप्रधान सृष्टि को सतयुग कहा जाता है, रजोप्रधान को द्वापर कहा जाता है और तमोप्रधान को कलियुग कहा जाता है। ब्रह्मलोक से आत्माओं के उतरने का यही क्रम है कि जितनी श्रेष्ठ आत्मायें हैं उतना ही श्रेष्ठ युग में उतरती हैं। जो 16 कला सम्पूर्ण आत्माएं हैं वो सतयुग में उतरती हैं। जो 14 कला सम्पूर्ण आत्माएं हैं वो त्रेतायुग में उतरती हैं। जो 8 कला सम्पूर्ण आत्माएं हैं द्वापर में उतरती हैं और कलियुग से कलाहीनता शुरू हो जाती है। वो कलाहीन आत्माएं , दूसरों को दुःख देना ही जिनका धर्म है , जिनके लिए गीता में एक शब्द आया है '' मूढ़ा जन्मनि जन्मनि ''। नारकीय योनी में आकर गिरती हैं। वो आत्माएं कलियुग के अन्त में आती हैं। जब सारी ही आत्माएं नीचे उतर आती हैं और उनको वापस जाने का रास्ता भी नहीं मिलता। यहीं जन्म–मरण के चक्र में आती रहती हैं, चक्र काटती रहती हैं और वो आत्माएं जन्म–मरण के चक्र काटते–काटते शरीर से सुख भोगते–भोगते तामसी बन जाती हैं। बीज है, कई बार बोया जायेगा तो उसकी शक्ति क्षीण हो जाती है। पत्ता छोटा फल छोटा , वृक्ष छोटा

और आखरीन होते–होते वह फल देना ही बन्द कर देता है। तो ऐसे ही आत्माओं का ये हिसाब है कि जब एक बार ऊपर से नीचे आ गईं तो वो नीचे ही उतरती जाती हैं। आप इस सृष्टि की 2500 वर्ष की हिस्ट्री ले लीजिए। दुनियाँ में सुख–शान्ति, अशान्ति के रूप में बदलती गई है या दुःख और अशान्ति कम होती गई ? हिस्ट्री क्या कहती है ? जनसंख्या जैसे–जैसे बढ़ती गई, ऊपर से आत्माएं उतरती गईं तो जनसंख्या के बढ़ने से सृष्टि में दुःख और अशान्ति तो बढ़नी ही बढ़नी है , वो बढ़ती गई। एक इंतहा होती है जब सारी की सारी आत्माएं नीचे उतर आती हैं। दुनियाँ में हमेशा कीट, पशु, पक्षी, पतंगों की जनसंख्या बढ़ रही है। देश विदेश में इतनी कीटनाशक दवाइयाँ छिड़की जा रही हैं लेकिन उनकी संख्या लगातार बढ़ती चली जा रही है। मच्छरों , मक्खियों की संख्या लगातार वृद्धि हो रही है तो आखिर ये आत्माएं कहाँ से आ रही हैं उसका समाधान गीता के अनुसार ही है; लेकिन क्लीयर किसी ने नहीं किया। अभी ये बात क्लीयर हो रही है कि ये आत्मायें उस लोक से आ रही हैं और यहीं जन्म–मरण के चक्र काटते–काटते अपना पार्ट बजाती जा रही हैं।

जब सारी ही आत्माएं उतरने को होती हैं तब अन्त में परमात्मा शिव इस सृष्टि पर आता है और आकर इस सृष्टि रूपी रंगमंच की जो हीरो– हीरोईन पार्टधारी आत्माएं हैं ,जिनमें वह प्रवेश करता है उनको अंग्रेजों में कहा जाता है "एडम" और "ईव" सृष्टि के आदिपुरुष। मुसलमानों में उनको कहा जाता है "आदम" और "हव्वा" और हिन्दुओं में कहा जाता है "त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणः। त्वमस्य विश्वस्य परमं निधानम् "– शंकर पार्वती। उनका ओरीजिन किसी ने नहीं बताया कि वो आदिशक्ति और वो आदि देव कैसे आए? उनको जन्म देने वाला कौन है ? किसी को पता ही नहीं। अपने हिन्दू परम्परा में "शंकर पार्वती" और जैनियों में उनको कहा जाता है "आदिनाथ और आदिनाथिनी"। देखिए आप, शब्दों में कितना साम्य है।

पहले दुनियाँ में एक ही धर्म था और एकता थी। वो एकता तभी आ सकती है कि जब सारी दुनियाँ का माँ–बाप एक हो। "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना असली तभी हो सकती है जबकि पहले–पहले दुनियाँ में एक ही मात–पिता हों। तो वो परमात्मा आता है आकर के जो रंगमंच के हीरो–हीरोईन पार्टधारी हैं–राम–कृष्ण की आत्माएं ,उनको उठाता है। अभी वो रामकृष्ण के रूप में तो नहीं होते। क्योंकि कृष्ण/नारायण का राज्य तो सतयुग में था। राम का राज्य त्रेता में था। वही रामकृष्ण की आत्माएं जन्म–मरण के चक्र में नीचे उतरते–उतरते हमारे आप के जैसे रूप में कहीं ना कहीं नर रूप में हैं। उन नर रूपों में परमात्मा शिव प्रवेश करता है। जैसे गीता में एक शब्द आया है "प्रवेष्टुम्"– मैं प्रवेश करने योग्य हूँ। कौन? वो सुप्रीम सोल , जो जन्म– मरण के चक्र से न्यारा है वो प्रवेश करके कृष्ण वाली सोल के द्वारा पहले माँ का पार्ट बजाता है। जिसका नाम अपनी भारतीय परम्परा में रखा जाता है "ब्रह्मा"। ब्रह्म माने बड़ी और माँ माने माँ। दुनियाँ में सबसे जास्ती सहन करने वाली माँ होती है। परमात्मा भी इस सृष्टि पर आकर माँ का पार्ट बजाता है जिसके लिए अपने भारतीय परम्परा में परमात्मा की महिमा के गीत गाये हैं। कहा है– त्वमेव माता च पिता त्वमेव ––––। वो सबसे पहले इस सृष्टि पर आकर ब्रह्मा के रूप में माँ का पार्ट बजाता है। इतना प्यार देता है, इतना प्यार देता है कि जो असुर हैं वो उससे वरदान लेने के आदी हो जाते हैं । माँ की ये हालत होती है कि कोढ़ी , काना , कुब्जा , चोर, डकैत, लुच्चा , लफंगा बच्चा होगा उसको भी अपनी गोद से अलग नहीं करना चाहेगी। बाप कहेगा – " चल हट्ट निकल बाहर"। लेकिन माँ गोद से अलग नहीं करना चाहेगी। ऐसे ही ब्रह्मा का जो पार्ट है वो इस सृष्टि पर पहले चलता है।

परमात्मा शिव ब्रह्मा में प्रवेश करके जो वाणी चलाते हैं उस वाणी का नाम पड़ता है "मुरली"। मुरली नाम क्यों ? हम और आप जानते हैं कि कृष्ण के हाथ में मुरली दिखाई जाती है। तो हमने ये समझ लिया कोई बाँस की मुरली होगी। लेकिन ये तो कवियों की प्रतीकात्मक, लाक्षणिक और आलंकारिक भाषा है जो शास्त्रकारों ने गीता, भागवत,रामायण,महाभारत में लिखी हुई है, उसका वास्तविक अर्थ ये है कि परमात्मा ब्रह्मा के मुख से या रथ से , माने कृष्ण की सोल के द्वारा पहले–पहले इस सृष्टि पर आकर जो प्यार देता है, मीठी वाणी सुनाता है। वो मीठी वाणी उतनी ही अच्छी लगती है जितनी लोगों को समझ में आ जाती है कि ये बात क्या है ? उससे ज्यादा बढ़कर के मीठी और सुरीली तान कोई है ही नहीं। इसलिए उसका नाम रखा गया मधुर गीत , गीता अथवा सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ, सर्वोपरि ग्रंथ जो भारत का सर्वशास्त्र शिरोमणि "गीता" है उसको "मुरली" कहा जाता है। परमात्मा आकर ब्रह्मा के द्वारा ये ज्ञान सुनाता है। माँ के रूप में वो ब्राह्मणों को जन्म देता है। हम समझते हैं कि शास्त्रों में लिखा हुआ है ब्रह्मा के मुख से ब्राह्मण निकले। समझते हैं कि ऐसी कोई होगी कलाकारी मुँह में कि उन्होंने मुँह से " हुआ " किया और ब्राह्मण निकल पड़े। लेकिन ऐसा कुछ नहीं होता। यही पुरानी सृष्टि होती है। इसी पुरानी सृष्टि में परमपिता परमात्मा आकर ब्रह्मा में प्रवेश करके जो ज्ञान सुनाता है उस ज्ञान को सुनकर जो अपने जीवन को बनाते हैं, सुधारते हैं उन्हीं में ब्राह्मण के संस्कार आ जाते हैं, वो ब्राह्मण। तो ब्राह्मणों की उत्पत्ति होती है जिनको ब्रह्माकुमार या ब्रह्मा की कुमारी कहा जाता है। ये सृष्टि के शुरूआत की बात है जो अभी पुनरावर्तन हो रही है। माऊंट आबू से इस कार्य की शुरूआत हुई। शिव गुप्त रूप में आता है। जैसे गीता में कहा है,'' साधारण तन में आए हुए मुझ परमात्मा को मूढ़मति लोग पहचान नहीं पाते।'' ये जो आपको ब्रह्मा का प्रैक्टिकल रूप दिखाया ये व्यक्तित्व 1968 में देहांत हो चुका है। माऊण्ट आबू में इनके

द्वारा परमात्मा शिव ने ब्राह्मण धर्म की स्थापना कराई थी। इनका नाम दादा लेखराज था। सिंध हैदराबाद के रहने वाले थे। सिंध

ी ब्राह्मण थे। इनके द्वारा ये कार्य सम्पन्न हुआ। अभी तो देश–विदेश में ढेर सारे ब्रह्माकुमारी आश्रम खुले हुए हैं। 60 साल के अन्दर इतनी जबरदस्त स्थापना करना सामान्य बात तो नहीं है। कृष्ण की सोल दादा लेखराज का वर्तमान नाम ब्रह्मा देवता है और परमात्मा शिव उसके द्वारा जब ब्राह्मण धर्म की स्थापना करता है तब ढेर सारे ब्रह्माकुमार–कुमारी तैयार हो जाते हैं। परमात्मा देखता है कि इन ब्राह्मण बच्चों में ही दो किस्म के बच्चे पैदा हुए हैं। एक रावण , कुम्भकरण , मेघनाद भी ब्राह्मण थे और अपने जीवन में गुरू वसिष्ठ, विश्वामित्र ने भी ब्राह्मणत्व अपनाया है। उन वसिष्ठ, विश्वामित्र जैसों की संख्या थोड़ी हो जाती है और रावण,कुम्भकर्ण , मेघनाद जैसों की संख्या ढेर सारी हो जाती है। यही बात ब्रह्माकुमारी आश्रम में भी हुई। ब्रह्मा से जो पैदा हुए ब्रह्मा वत्स हैं उनमें दुष्ट ब्राह्मण ढेर सारे पैदा हो गये और जो ज्ञान, योग में ज्यादा रस लेने वाले हैं , त्यागी , तपस्वी हैं , वो थोड़े रह गये। लिहाजा परमात्मा को वो लेखराज ब्रह्मा का शरीर छोड़ देना पड़ता है। उसके बाद 69 में रामवाली सशक्त आत्मा में परमात्मा प्रवेश करता है ं। क्योंकि माता का प्यार भरा पार्ट उसी शिव का है तो पिता का भी सख्त पार्ट उसी का है। लेकिन "टेढ़ी उँगली किये बगैर घी नहीं निकलता है"। अब राम वाली सोल कहीं न कहीं तो इस सृष्टि पर होगी ना ? तो उस व्यक्तित्व में जो कि ऑलरेडी पहले से ही ब्रह्माकुमार बना हुआ होता है उसमें प्रवेश करके वो शिव परमात्मा अपना कार्य फिर से आरम्भ करता है। ये गुप्त कार्य आरम्भ होने के बाद थोड़े समय के अन्दर ही ब्रह्माकुमारी संस्था में स्पष्ट विभाजन नज़र आता है। जैसे सभी धर्मों में हुआ। बौद्धियों में "हीनयान" , "महायान" दो सम्प्रदाय हो गये। जैनियों में "श्वेताम्बर" और "दिगंबर" दो सम्प्रदाय हो गये। मुसलमानों में "शिया" और "सुन्नी" दो सम्प्रदाय हो गये। क्रिश्चियन्स में "रोमन कैथोलिक" और "प्रोटेस्टेंट" दो सम्प्रदाय हो गए। तो ये दूसरे जो भी धर्म हैं उन सबने उस परमात्मा को ही फॉलो किया।

जब परमात्मा ने आकर नये सनातन धर्म की स्थापना की है तो भी यही प्रक्रिया चली कि ब्रह्मा के शरीर छोड़ने के कुछ समय बाद उस ब्रह्माकुमारी आश्रम में दो तरह के लोग स्पष्ट नज़र आते हैं। तो आपस में टकराव पैदा होता है। बुद्धिजीवीयों की संख्या कम होती है और वो अलग कर दिए जाते हैं। तो संघर्ष तो बढ़ेगा। हर धर्म में ये संघर्ष बढ़ते–बढ़ते विकराल रूप धारण करता है। गुरुओं का जो बड़ा वर्ग है वो सच्चाई को नहीं पहचानता क्योंकि उनको तो गद्दी मिली हुई है। वो माऊंट आबू में अभी भी काबिज है। उस सच्ची बात को सुनते नहीं हैं। लेकिन आप देखेंगे कि परमात्मा ने जो कुछ भी वाणी सुनाई है वो वाणी शतशह अपनी जगह पर शास्त्रसंगत हैं। लेकिन ब्रह्माकुमारियाँ आज भी ये बात कह रही हैं कि शास्त्र सब झूठे हैं और हमारे बाबा ने जो कुछ बोला है वो ही सच्चा है। लेकिन बाबा ने जो कुछ बोला है उसका अर्थ क्या है ? वो उन्हें पता ही नहीं है और सुनने के लिए भी तैयार नहीं हैं। हर धर्म में ये आपसी संवादहीनता की स्थिति पैदा होती रही है। शंकर/राम वाली आत्मा जो त्रेतायुग में भी होती है वो ही जन्म–मरण के चक्र में आते–आते कलियुग अन्त में उनका जो साधारण मनुष्य तन होता है उसमें परमात्मा शिव प्रवेश करके शंकर के नाम रूप से संसार में धीरे–धीरे प्रत्यक्ष होना शुरू होता है। शंकर का सख्त पार्ट है। सख्त पार्ट के द्वारा ब्राह्मणों के सम्प्रदाय में दो हिस्से हो जाते हैं। कुछ चुनी हुई श्रेष्ठ आत्माएं निकलती हैं। आपने देखा होगा शंकर जी के बाहों में माला दिखाते हैं। गले में भी कई तरह की मालाएं पड़ी हुई हैं। माला होती है संगठन की निशानी। प्यार के सूत्र , ज्ञान के सूत्र में वो मणके रूपी आत्माएं पिरोई जाती हैं। उनका संगठन तैयार किया जाता हैं। वो संगठन सारे संसार में मान्यता प्राप्त करता है। आप देखेंगे मुसलमानों में भी माला घुमाई जाती है। क्रिश्चियन्स में भी माला घुमाई जाती है। बौद्धी लोग भी माला घुमाते हैं। सिक्ख लोग भी माला घुमाते हैं। ये माला का इतना विश्वव्यापी महत्व क्या है जो हर धर्म में माला घुमाई जाती है ये कोई नहीं जानता। बाबा ने मुरली में बताया है कि बच्चे ये जो माला है , ये मणके तुम आत्माओं की यादगार हैं। जब परमात्मा आता है तो तुम आत्मा रूपी मणकों को , श्रेष्ठ आत्माओं को इकट्ठा करता है और श्रेष्ठ आत्माओं का जो संगठन तैयार होता है वो सारे संसार में तहलका मचाता है। पहले भारतवर्ष में ब्राह्मणों की दुनियाँ के अन्दर तहलका शुरू होता है।

माला के संगठन में 108 मणके होते हैं। आप देखेंगे दुनियाँ में आज खास–खास 9 धर्म फैले हैं। हिन्दू धर्म तो बहुत पुराना है। उसमें से सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी ऐसे हैं, जो कभी दूसरे धर्मों में कनवर्ट नहीं होते और दूसरे धर्म ऐसे हैं कि जो कनवर्ट ही होते रहे। मुसलमान आये तो मुसलमानों में कनवर्ट हो गये, क्रिश्चियन्स आये तो क्रिश्चियन्स में कनवर्ट हो गये, सिक्ख आये तो सिक्ख में कनवर्ट हो गये माना सनातन धर्म में दो प्रकार के वर्ग हो गयें। एक नॉन कनवर्टेड जो कभी कनवर्ट नहीं हुए। भले किसी भी तरह की कोई परीक्षा आई , अपने धर्म को छोड़ा नहीं। दूसरे वह जो नम्बरवार कनवर्ट ही होते रहे–एक से दूसरे धर्म में , दूसरे से तीसरे धर्म में , तीसरे से चौथे धर्म में। आज से 2500 वर्ष पहले अरब में "इस्लाम धर्म" आया फिर "बौद्ध धर्म" आया। चीन, जापान , तिब्बत , बरमा , मलाया में फैला। पाँचवा "क्रिश्चियन धर्म" आया जो योरोपीय देशों में फैला, अमेरिका में फैल गया।छठा शंकराचार्य का "सन्यास धर्म"। लाल, पीले, सफेद कपड़े पहनकर निकला। उसके बाद मुहम्मद जिन्होंने इस्लाम धर्म के दो हिस्से करके मूर्तिपूजा बंद करवा दी और "मुस्लिम धर्म" फैलाया। उसके बाद गुरूनानक आये और गुरूनानक ने मुसलमानों से टक्कर लेने के लिए भारत के ही

जो अच्छे–खासे हट्टेकट्टे कम बुद्धिवाले सनातन धर्म के लोग थे उनको कनवर्ट करके "सिक्ख" बना दिया और वे मुसलमानों से, क्रिश्चियन्स से टक्कर लेते रहे।टोटल मिलाकर अन्त में "आर्यसमाज" एक ऐसा धर्म आता है जो सभी विधर्मियों का आवाहन करता है कि भारतवर्ष में आकर सब इकट्ठे हो जाओ। कोई भी धर्म का हो हम उसे हिन्दू बना देंगे। हिन्दुओं ने तो कभी विधर्मियों को स्वीकार नहीं किया। इन्होंने अपने में सब अश्रद्धालु मनुष्य आत्माओं का किचड़ा इकट्ठा कर लिया। नास्तिकवाद एक धर्म ऐसा है जो माला में नम्बर ही नहीं पाता। ईश्वर की जो 108 की माला बनती है उसमें उनका नम्बर नहीं लगता। वो है ये "नास्तिक", रशियन्स। वो न स्वर्ग मानते हैं, न नर्क मानते हैं न आत्मा मानते हैं न परमात्मा मानते हैं वो कुछ नहीं मानते। वो अपने नशे में आकर ऐटमिक एनर्जी तैयार करते हैं कि हम ही सब कुछ हैं। हम चाहेंगे तो दुनियाँ को नचायेंगे। लेकिन वो अपने जाल में खुद ही फंस जाते हैं। आज तो रूस बिखर गया और उससे ज्यादा शक्ति अमेरिका ने ऐटमिक एनर्जी से धारण कर ली है। इस तरीके से दुनियाँ के मुख्य 9 धर्म हैं जो अभी आपको गिनाए। ये 9 धर्मों से अति श्रेष्ठ मुख्य–मुख्य चुनी हुई बारह–बारह आत्माएं परमात्मा इकट्ठी करता है। सारी सृष्टि से 12 X 9 =108 मणके चुनकर तैयार होते हैं।

आज से 60–65 साल पहले भारत वर्ष में इतने भगवान नहीं थे। आचार्य रजनीश भी भगवान, जय गुरुदेव भी भगवान, साँईं बाबा भगवान, सतपालजी महाराज भगवान, चन्द्रा स्वामीजी भगवान। 60–65 साल के अन्दर ही ये ढेर के ढेर भगवान पैदा हो गये। अब भगवान एक होगा या ढेर के ढेर होंगे? भगवान तो जरूर एक होगा। लेकिन हिसाब क्या है ? जब परमधाम छोड़कर सच्चा हीरा शिव परमात्मा इस सृष्टि पर आता है तो उसकी भेंट में ढेर सारे नकली हीरे दुनियाँ के बाजार में तैयार हो जाते हैं। वो नकली हीरे चारों तरफ अपना पाम्प एण्ड शो , शोर–शराबा फैला देते हैं। अभी जबलपुर में महेशयोगी की एक बिल्डिंग बनी है। सैकड़ो करोड़ रूपयों की बिल्डिंग तैयार हुई है। होना क्या है उसमें ? बस वही स्वाहा। उससे कुछ होता नहीं है। 2500 साल से ये स्वाहा–स्वाहा होता चला आया। इससे कोई परिवर्तन होना है क्या ? परिवर्तन कुछ भी नहीं होना है। वो एक बात बना दी कि वातावरण शुद्ध होता है। बजाय वातावरण शुद्ध होने के दुनियाँ और ही ज़्यादा बिगड़ती रही है। (एक भाई ने कहा–वो गोल्ड का स्मगलिंग करते हैं अमेरिका से) चलो वो कुछ भी हो हमने एक बात बताई कि भगवान ढेर के ढेर हैं लेकिन नकली हीरे हैं और उनमें पता नहीं चल रहा है कि असली कौन है ? जरूर असली भी है लेकिन पता नहीं चल रहा है और उसका प्रूफ ये है कि भगवान जब आयेगा तो नई सृष्टि के स्थापना के साथ–साथ पुरानी सृष्टि का विनाश का कार्य भी करेगा। परमपिता परमात्मा सत् धर्म की स्थापना के साथ–साथ जो ढेर के ढेर दुष्ट धर्म फैले हुए हैं उनके विनाश का भी कार्य करता है। "विनाशाय च दुष्कृताम्" ये गीता का पहला श्लोक ही बताता है। तो परमात्मा इस सृष्टि पर जब आता है तो ये तैयारी पहले कराता है साथ ही साथ स्थापना गुप्त कराता है और विनाश का कार्य प्रत्यक्ष कराता है।

रूस और अमेरिकावासी जिन्हें महाभारत में यादव कहा गया है वह बड़े–बड़े धनाढ्य होते थे और बहुत शराब पीते थे, ऊंची–ऊंची बिल्डिंगे होती थीं। ऐसे जो महाभारत प्रसिद्ध यादव ग्रुप हैं उन यादवों ने क्या किया ? भगवान कृष्ण के कन्ट्रोल में थे कृष्ण की राजाई उनके ऊपर थी। यादवों के बुद्धिरूपी पेट से जो मिसाइल्स निकले, उन मूसलों से आपस में भिड़कर,, लड़कर उन्होंने अपने सारे कुल का संहार कर दिया और सारी सृष्टि का विनाश कर दिया। लोगों ने स्थूल मूसल समझ लिये। अब ये तो समझने–समझने की विडंबना है। वास्तव में है मिसाइल्स की बात।

पेट में भी कोई बात पचाई जाती है। रखी जाती है। ऐसे ही ये बुद्धि रूपी पेट भी है। कहते हैं तुम्हारे पेट में बात नहीं पचती। तो क्या ये (स्थूल) पेट है ? या ये (बुद्धि रूपी) पेट है? ये बुद्धि रूपी पेट है ना ? तो इस बुद्धि रूपी पेट में से वो मिसाइल्स निकले, मूसल्स निकले। उन मूसलों से ये सारी दुनियाँ नष्ट होती है। 60–65 साल के अन्दर ही ये एनर्जी भी तैयार हो गई। 60– 65 साल के अन्दर परमात्मा का भी इस सृष्टि पर अवतरण हुआ और 60 साल के शुरूआती दौर में उस समय महात्मा गांधी के टाइम पर भारतवर्ष में सबसे ज्यादा आवाज़ लगाई गई थी। यह "हे पतित पावन आओ" की आवाज भी इसी भारत में लग रही थी। 40 करोड़ जनता गांधीजी के तत्वावधान में आवाज़ लगा रही थी , सारे भारत की 40 करोड़ जनता "रघु पति राघव राजा राम, पतित पावन सीता राम" की आवाज़ लगा रही थी। लेकिन आवाज़ लगाने वालों को ये पता नहीं चला कि परमात्मा इस सृष्टि पर उस समय से ही आ चुका है। तो कहने का मतलब ये है कि ,परमात्मा जब आता है तो एक तरफ विनाश की बाजी भी तैयार कर देता है और दूसरी तरफ स्थापना का कार्य भी गुप्त में चलाता है। ये दोनों कार्य उसी समय से आरम्भ हुए। स्थापना का कार्य पूरा होता है और जब ऐटमिक एनर्जी की भी चर्म सीमा हो जाती है तब इस सृष्टि का एक तरफ विनाश होता है और दूसरी तरफ माला तैयार हो जाती है।जो माला रूपी संगठन अन्ततः सारे सृष्टि की कन्ट्रोलिंग,(धर्म सत्ता और राज्य सत्ता) धीरे–धीरे अपने हाथ में ले लेता है।जैसे अभी आपने ज्योतिषियों की कुछ वाणियाँ सुनी होंगी। अक्सर निकलती रहती हैं। पुराने–पुराने 400 साल, 500 साल पहले के जो ज्योतिषी हुए हैं कीरो, कीट और ये नेस्तरडम–इनकी भविष्य वाणियाँ

निकली हुई हैं। सभी ने 2000 को मुद्दा बनाया। लेकिन वो 2000 के आसपास का जो भी मुद्दा है वो सारी सृष्टि के विनाश का मुद्दा नहीं है। वो वास्तव में सिर्फ ब्रह्माकुमारी आश्रम के अन्दर की दुनियाँ का विनाश का मुद्दा है ये कोई नहीं जानता। ये इतनी बडी दुनियाँ एकदम ऐसे खत्म हो जायेगी तो परमात्मा को कौन पहचानेगा? परमात्मा को पहचानने के लिए टाइम तो चाहिए। तो वास्तव में ये जो 2000 के बाद से शुरू होनेवाला पीरियड है ये ब्रह्माकुमारी आश्रम में आमूल– चूल परिवर्तन ला देगा। बाहर की दुनियाँ में भी कुछ थोड़ा–थोड़ा होगा लेकिन वो इतना नहीं होगा कि सारी दुनियाँ खत्म हो जाए। ऐटमिक एनर्जी का भी थोड़ा–थोड़ा विस्फोट होगा लेकिन इतना नहीं होगा कि अभी सारी सृष्टि खत्म हो जाए। सिर्फ बीजरूप, आधारमूर्त ब्राह्मणों की पुरानी दुनियाँ का विनाश होता है। नई दुनियाँ की स्थापना होती है और सब आत्माएं जो हैं वो पहले बुद्धि योग से वापस परमधाम जाती हैं। माने ब्राह्मणों की दुनियाँ के अन्दर विशेष आत्माएं इस बात को समझ लेती हैं कि परमात्मा का रूप और कार्य काल क्या है ? और कैसे ये कार्य चल रहा है ?

जैसे हम आत्माएं ज्योतिर्बिन्दु हैं वो परमात्मा भी ज्योतिर्बिन्दु है। वो ज्योतिर्बिन्दु का ही बड़ा आकार शिवलिंग बनाया जाता हैं जिसे अपने भारतीय परम्परा में 12 ज्योतिर्लिंगम् के नाम से प्रसिद्ध किया गया है। उज्जैन है, काशी है, रामेश्वरम् है, केदारनाथ है, बद्रीनाथ आदि–2 ये 12 ज्योतिर्लिंगम् बने हैं। 12 ही क्यों हैं ? 13 क्यों नहीं ? 11 या 10 क्यों नहीं ? 9 धर्मों से चुनी हुई आत्माओं के 12–12 के 9 ग्रुप्स होते हैं। हर धर्म में श्रेष्ठ आत्माएं तो होती हैं ना ? परमात्मा भी जब आता है तो हर धर्म से श्रेष्ठ आत्माओं को चुनता है और चुनकर उनको ब्राह्मण बनाता है।

आज की दुनियाँ में वास्तव में कोई ब्राह्मण नहीं रहे। (ये क्या कहते हैं आप?आप तो ब्राह्मणों की अवहेलना करते हैं।) नहीं। तुलसी दास ने ये बात रामायण में आज से 400–500 वर्ष पहले लिखकर छोड़ी है '' भये वर्णसंकर सबै।'' सारे ही वर्ण संकर हो गये। कोई ब्राह्मण नहीं रहा। 400 साल पहले जब उन्होंने लिखा था तो अब तो हालत बहुत खराब हो गई। अब तो बहुत ज्यादा व्यभिचार फैल गया। घर–घर में भी व्यभिचार फैला हुआ है।

असली ब्राह्मण कुल की स्थापना परमात्मा आकर इस समय कर रहा है। उन ब्राह्मणों की 9 कुरियां गाई जाती हैं। शांडिल्य गोत्र , भारद्वाज गोत्र , कश्यप गोत्र आदि–आदि, नौ ऋषियों के आधार पर नौ गोत्र गाये जाते हैं। नौ ऋषि कोई दूसरे नहीं हैं। 9 धर्मों का प्रतिनिधित्व करने वाली नौ श्रेष्ठ आत्माएं हैं जो परमात्मा इस सृष्टि से ब्राह्मण धर्म में चुनता है। वो 9 आत्माएं जो हैं उनमें से एक सबसे श्रेष्ठ होगा ना ? जो सबसे श्रेष्ठ हुआ उसके जो 12 के ग्रुप हैं वो परमात्मा शिव से इतना तादात्म्य स्थापित करते हैं कि उनकी परमात्मा शिव जैसी ही नम्बरवार निराकारी स्टेज बन जाती है। इसलिए 12 ज्योतिर्लिंगम् आज भी भारतवर्ष में भगवान के रूप में पूजे जाते हैं। कहने का मतलब हुआ कि परमात्मा शिव भी ज्योति बिंदु है। ऋषियों , महर्षियों ने उसकी पूजा के लिए बड़ा आकार बना दिया है। वो निराकार का प्रतीक है। निराकार का मतलब ये है कि 12 में से 1 शंकर का रूप जिसे रूद्र अवतार कहा जाता है, वो ऐसी निराकारी स्टेज में रहता है कि जैसे कि हमारे शरीर रूपी वस्त्र हैं ही नहीं। ये इंद्रियाँ हैं ही नहीं। इस स्टेज में रहना , अपने को आत्मिक स्टेज में सदैव समझना , दूसरों को आत्मा के रूप में देखना–ये ऐसी पक्की प्रैक्टिस हो जाय जिसको कहेंगे निराकारी निर्विकारी निरहंकारी स्टेज। इंद्रियाँ जैसे होते हुए भी नहीं हैं। जैसे कहते हैं देखते हुए नहीं देखना , सुनते हुए न सुनना। दुनियाँ में कितनी भी ग्लानी उड़ रही है लेकिन उनके ऊपर कोई असर नहीं पड़ रहा है–जैसे सुनते हुए न सुनना।

<u>" बी " साइड (कैसेट)</u>

वो तो गॉडफादर है,राम है या कृष्ण है।नाम रूप अलग–अलग दे दिये हैं। लेकिन अलग–अलग नाम रूप देते हुए भी एक रूप ऐसा है जो हर धर्म में मान्यता प्राप्त करता है।कैसे? अपने भारतवर्ष में ज्योतिर्लिंगम् माने जाते हैं। रामेश्वरम् वगैरह। कहते हैं राम ने भी शिव की उपासना की थी। राम को भगवान मानते हैं। लेकिन उपासना किसकी की ? शिव की उपासना की। तो राम भगवान हुआ या शिव भगवान हुआ ? शिव ही हुआ। ऐसे ही गोपेश्वरम् मंदिर भी बना हुआ है। गोप कृष्ण को कहा जाता है। तो उससे साबित हो गया कि कृष्ण भगवान नहीं थे। वास्तव में उनका भी कोई ईश्वर है जिनको कृष्ण जैसा उसने बनाया। ऐसे ही केदारनाथ है, बद्रीनाथ है, काशीविश्वनाथ है और ये सोमनाथ है। ये सभी मंदिरों में इस बात की यादगार है कि भारतवर्ष में वो निराकार ज्योति को ज्योतिर्लिंगम् के रूप होता है, कि जब सब धर्मों में उस एक ही रूप की मान्यता है तो सब धर्मवाले एक को ही परमात्मा का रूप क्यों नहीं मानते हैं ? ये अलग–अलग रूप क्यों माने हुए हैं ? तो ये वास्तविकता किसकी बुद्धि में नहीं आ रही है।

वो निराकार ज्योति जब इस सृष्टि पर आती है तो राम और कृष्ण इन दो विशेष आत्माओं को चुनकर सृष्टि की स्थापना और विनाश के कार्य में मुखिया बनाती है। कृष्ण की सोल आखरी जन्म में आकर दादा लेखराज ब्रह्मा के रूप में सिन्ध हैदराबाद में जन्म लेती है और उसमें प्रवेश करके परमात्मा शिव ब्रह्मा (बड़ी मां) के रूप में कार्य करते हैं। प्यार का पार्ट बजाते हैं। आप कहीं भी , किसी भी ब्रह्माकुमारी आश्रम में जायें तो आप कोई भी

ब्रह्माकुमार – कुमारी से पूछना कि बाबा ने कभी किसी को टेढ़ी आँख से देखा या गलत कुवचन कहा या कभी कोई ऐसा है जिसने बाबा के सम्पर्क में पहुँचने के बाद ये अनुभव किया हो कि बाबा ने दुःख दिया। एक–एक ब्रह्माकुमार–कुमारी यही कहेगा कि बाबा ने हमको (भले 10 मिनट के लिए मिले हों) जितना प्यार दिया उतना दुनियाँ में हमको किसी से अनुभूति नहीं हुई। वो प्यार की प्रति मूर्ति ब्रह्मा बड़ी मॉं–दादी मॉं ही थे।

टी.वी. में अभी भी सीरियल्स आते हैं , तो आप देखते हैं कि असुरों ने भी ब्रह्मा से वरदान ले लिये। हैं असुर लेकिन वरदान फिर भी माँ से ले लेते हैं। तो वास्तव में वो रूप दिखाया गया है और इनके जस्ट अपोजिट एक दूसरा रूप है राम वाली आत्मा। हर त्रेता में '' कल्प कल्प लगि प्रभु अवतारा'' ऐसे जो कहा गया है कि हर कलियुग के अन्त में परमात्मा राम वाली आत्मा में प्रवेश करके शंकर के नाम रूप से प्रख्यात होते हैं। जैसे इन कृष्ण का नाम रूप प्रख्यात हुआ है "ब्रह्मा"। वैसे उन राम का नाम रूप प्रख्यात होता है "शंकर"। ये दोनों की दो आत्माएं सहयोगी शक्तियाँ भी हैं। कृष्ण की सहयोगी शक्ति "राधा" और राम की सहयोगी शक्ति "सीता"। इनके वर्तमान संगमयुगी नाम पड़ते हैं– ब्रह्मा की सहयोगी शक्ति "सरस्वती" और शंकर की सहयोगी शक्ति "पार्वती"। जब कलियुगी दुनियाँ समाप्त होती है , नई सतयुगी सृष्टि रची जाती है तो विष्णु चतुर्भुज के प्रतीकात्मक स्वरूप में इन चारों आत्माओं के स्वभाव– संस्कार का कॉम्बिनेशन होता है। अभी तो हर घर में स्त्री पुरूष के संस्कार आपस में टकराते हैं। कोई घर ऐसा नहीं होगा जिसमें कुछ न कुछ संस्कार टकराये नहीं। लेकिन सबसे पहले एक ऐसी भी दुनियाँ परमात्मा ने बनाई थी कि इन चार आत्माओं के सारे संस्कार मिलकर एक हो गये थे। वो ये आत्माएं हैं जो सृष्टि के हीरो–हीरोइन हैं और ये आत्माओं के संस्कारों का कॉम्बिनेशन विष्णु के रूप में दिखाया गया है। भुजाएं कहते हैं ना ! मेरे भैया ने शरीर छोड़ दिया। मेरी दाहिनी भुजा टूट गई। तो दाहिनी भुजा थोड़े ही टूट गई। माना जो सहयोगी शक्ति थी वो चली गई। तो इसी तरह परमात्मा के कार्य में दो दाहिनी भुजा के रूप में सहयोगी बनते हैं– ब्रह्मा सरस्वती माना राधा, कृष्ण। ये कड़ा कठोर रूप कभी नहीं अपनाते। परिवर्तन के लिए इन्होंने हमेशा प्यार का काम किया। इसलिये इनको परमात्मा ने राइट हैण्ड स्वीकार किया। लेकिन जब राइट हैण्ड से काम नहीं निकलता तो फिर टेढ़ी उंगली भी की जाती है। वो दो रूप ये हैं शंकर और पार्वती। चामुंडा का रूप धारण करती है आदि शक्ति और शंकर प्रलयंकर रूप धारण करता है। वो राम वाली आत्मा प्रलय मचाती है। शक्ति का रूप धारण किए बगैर रावण, कुम्भकरण, मेघनाद जैसे परिवर्तन नहीं हो सकते ज्यादा से ज्यादा तादाद में ऐसे दुराचारी ब्राह्मण रावण , कुम्भकरण , मेघनाद का पार्ट बजाते हैं उनको सुधारने के कार्य के लिये ये ज्ञान बाण मारने वाली राम की आत्मा तैयार होती है। बाण कोई दूसरे नहीं हैं। शिव परमात्मा ने आकर राम/शंकर के मुख द्वारा उन असुरों के लिए जो बातें बोली हैं वो ही ज्ञान बाणों का काम करती हैं। हमको तो वो महावाक्य प्यारे लगते हैं लेकिन उस तरह की जो आसुरी अत्मायें ब्राह्मण परिवार में घुसी हुई हैं उनको वो बाण लगते हैं। उनको घाव पैदा कर देते हैं। तो इस तरीके से ये दो रूप जो ब्रह्मा व शंकर हैं उनमें ये तीसरा रूप विष्णु समाया हुआ है। इसीलिए ब्रह्मा ,सरस्वती , शंकर और पार्वती रूपी चार आत्माओं के संस्कारों का काम्बिनेशन ही विष्णु कहा जाता है। बाकी ऐसा कोई व्यक्ति संसार में कभी हुआ नहीं है जो चार भुजाओं का रहा हो उसी तरह 10 सिर के रावण का मतलब ये है कि दसों धर्मों के धर्माधीश आपस में मिलकर संसार के प्रजातंत्र राज्य का ऐसा संगठन बनाते हैं जिससे सारी दुनियाँ में तबाही पैदा हो जाती है। बाकी परमात्मा ने तो आकर राजयोग सिखाकर एक सनातन धर्म की राजाई तैयार की थी।

परमात्मा जो सद्‌गुरु कहा जाता है तो जरूर ऐसी ईश्वरीय युनिवर्सिटी का वाइस चान्सलर बनता होगा जहाँ वो कोई बड़ा कार्य, कराने हेतु नं. वार ऊँची पदवियॉं देकर जाता हो। परमात्मा ही बड़े ते बड़ा पद देता है। देश में और विदेश में जन्मजन्मांतर के जो राजायें बने हैं उन राजाओं को राजाई करने की हिकमत उसी ने सिखाई थी। उसको राजयोग कहा जाता है। वो राजयोग गीता ज्ञान के द्वारा परमात्मा अभी सिखा रहा है। जन्मजन्मांतर का राजा बना रहा है। जो लौकिक बाप होते हैं वो तो एक जन्म की प्राप्ति कराते हैं , वर्सा देते हैं ; लेकिन ये पारलौकिक बाप जब आता है तो सृष्टि पर बच्चों को अनेक जन्मों की राजाई देकर जाता है। वो अनेक जन्मों की राजाई अभी दी जा रही है। 108 श्रेष्ठ आत्मायें अभी कुछ ही वर्षों में संसार में जल्दी ही ऐसी प्रत्यक्ष होने वाली हैं , जो सारे संसार में तहलका मचायेंगी और सारे संसार की धर्म और राज्य सत्ता, दोनों की बागडोर अपने हाथ में ले लेंगी।

सारी दुनियाँ माया के पंजे में फंस जाती है तब वो ज्ञान सूर्य परमात्मा इस सृष्टि पर आता है। माया का पंजा कोई स्त्री नहीं है। ये काम, क्रोध ,लोभ ,मोह ,अहंकार ये पाँच विकार मनुष्य के अन्दर भरे हुए हैं उन पाँच विकारों में सारी दुनियाँ जकड़ गई है। आज एक भी मनुष्य ऐसा नहीं है जो इन पाँच विकारों की जकड़ से बाहर हो। जब ऐसी सृष्टि की हालत हो जाती है तब परमात्मा शिव आते हैं जिसकी यादगार ये महाशिवरात्रि मनाई जाती है। इस महाशिवरात्रि में परमात्मा शिव जब आते हैं तो चारों तरफ दुनिया में अनेक धर्म फैले हुए होते हैं। उन धर्मों में धर्म के नाम पर वितंडावाद ज्यादा होता है ,ज्ञान कुछ भी नहीं। ज्ञान के नाम पर अज्ञान ही अज्ञान सुनाया जाता है और पैसे को ज्यादा महत्व दिया जाता है , दिखावे को ज्यादा महत्व दिया जाता है और जो धर्म की स्थापना का कार्य है , धारणा

की बातें हैं वो ना के बराबर होती हैं। तब परमात्मा ज्ञान सूर्य इस सृष्टि पर आकर उस अज्ञान अंधकार का विच्छेदन करता है। इसीलिए उसकी यादगार में भारतर्ष में अर्ध रात्रि को माघ मास में महाशिवरात्रि मनाई जाती है। माना जब आख़िरी मास आना होता है माना सृष्टि का आख़िरी टाइम होता है , कलियुग का अन्त होना होता है तब दुनियाँ में अज्ञान अंधकार चारों तरफ फैला रहता है। जैसे शक्तिमान सीरियल में आता है '' अंधेरा कायम रहेगा '' तो असुर तो यही चिल्लाते हैं कि अंधेरा कायम रहे , दुनियाँ अज्ञान में रहे और हम अपना काम बनायें। तो ये हैं असुर–काम, क्रोध, लोभ, मोह , अहंकार। जिनका मुखिया है काम विकार। वो काम विकार को परमात्मा आकर सबसे पहले इस शंकर के चोले के द्वारा भस्म कराते हैं। हमने समझ लिया वो काम विकार कोई देवता का रूप होगा। कामदेव उसको नाम दे दिया। लेकिन वास्तव में वो कोई अलग से देवता नहीं होता। ये हमारे अन्दर की कुप्रवृत्ति है , हमारे अन्दर की कमजोरी है , हमारे अन्दर की वो विकृति है जो उस शंकर देव ने पहले भस्म कर दी। लेकिन राजयोग सीख कर उन भस्म करने वालों में नम्बरवार होते हैं। जो सबसे पहले उस काम विकार को भस्म कर लेता है , वह बात शंकर के लिये दिखाते हैं। उनका ज्ञान का तीसरा नेत्र खुला और काम विकार भस्म हो गया। वो कोई बाहर का काम विकार थोड़े ही था। ये तो अन्दर की चीज़ थी। जो उसने भस्म कर दी ,नष्ट कर दी। तो जब मुखिया भस्म होगा तो बाकी ये जो 4 चोर डकैत हैं वो तो अपने आप भाग जायेंगे। हमें यह बताया गया है कि वास्तव में शिव अलग है और शंकर अलग है। गलती के कारण हमने दोनों को एक कर दिया। लेकिन गलती नहीं है। वास्तव में वो हमारी बेसमझी की बात हो गयी। ये बेसमझी होने के कारण ही ब्रह्माकुमार,– ब्रह्माकुमारियाँ भी उस बेसमझी में फँसे हुए हैं। क्या बेसमझी हो गई ? कि वो सुप्रीम सोल निराकार ज्योतिर्बिन्दु जब इस सृष्टि पर आता है तो इस सृष्टि पर आकर किसी को तो आप समान बनायेगा। पढ़ाई पढ़ायेगा तो टीचर का कोई तो स्टूडेन्ट ऐसा निकलेगा जो उसकी पूरी सौ परसेंट पढ़ाई को धारण कर ले। तो वो निराकार ज्योति शिव आकर के इस शंकर स्वरूप के द्वारा संसार में प्रत्यक्ष होता है और शिवशंकर दोनों का तादात्म्य हो जाता है। आप देखेंगे कोई ये नहीं कहता है कि शिव ब्रह्मा एक है। शिव के साथ ब्रह्मा का नाम क्यों नहीं जुड़ा? शिव के साथ विष्णु का नाम क्यों नहीं जुड़ा? शिव के साथ शंकर का ही नाम क्यों जुड़ता है? इसलिए जुड़ता है कि वो शंकर शिव की याद में इतना तल्लीन हो जाता है कि उसको अपने में समा लेता है। तो वो समाने की लवलीन स्थिति जो है वो "शिव शंकर एक है" ये स्थिति संसार में प्रसिद्ध होती है। वास्तव में आत्माएं दोनों अलग–अलग हैं। ये सुप्रीम सोल शिव जन्म–मरण के चक्र में कभी आता ही नहीं इसलिए शिवलिंग कहा जाता है। शंकर लिंग नहीं कहा जाता। शिवरात्रि कही जाती है, शंकररात्रि नहीं कही जाती।शिव पाप और पुण्य से हमेशा परे है और जो देहधारी हैं वो पाप–पुण्य के अन्दर फँसते हैं। अब आप देखिए ये शंकर ध्यान में बैठे हैं। अगर ये खुद ही परमात्मा का रूप होते, सुप्रीम सोल होते तो ये किसका ध्यान कर रहे हैं? आप पुराने–पुराने मंदिरों में जाइये आप देखेंगे बीच में मुख्य स्थान पर शिवलिंग है , और आस–पास सभी देवताओं के साथ शंकर की भी मूर्ति रखी हुई होती है। इससे क्या साबित हुआ? और जितने देवताएं हैं उन 33 करोड़ देवताओं के बीच में शकर की मूर्ति देव–देव महादेव तो जरूर है लेकिन वो परमात्मा नहीं है। वो भी उसकी उपासना में सामने बैठा हुआ है।किसके सामने ? शिवलिंग के सामने। तो शिव ज्योतिर्बिन्दु सुप्रीम सोल है और ये हीरोपार्टधारी शंकर इस सृष्टि रूपी रंगमंच का नायक है।

यहाँ ये बताया गया है कि ईश्वर जब इस सृष्टि पर आता है तो जरूर कोई न कोई ऐसा ज्ञान का नया प्वाइन्ट बतायेगा जिसमें सारी दुनियाँ भ्रमित हुई पड़ी है। ऐसी नई बात जरूर सुनायेगा जो सारी दुनियाँ उस बात को न जानती हो या विपरीत रूप से जानती हो। वो बात है कि जब दुनियाँ में चारों तरफ भगवान को ढूँढा और कहीं नहीं मिला तो लोगों ने उसको सर्वव्यापी कहना शुरू कर दिया। जर्रे–जर्रे में भगवान है। कण–कण में भगवान है। जहाँ देखो वहाँ भगवान है। लेकिन वास्तव में गीता में पूरा श्लोक ही इस बात के लिए आ गया है कि –'' तद् धामो परमं मम '' मैं वहाँ परमधाम का रहने वाला हूँ। तो जब दुनियाँ का सबसे श्रेष्ठ ग्रन्थ गीता है जिसकी सबसे ज्यादा टीकाएं हुई हैं। पूरे श्लोक में ये बात साबित हो गई है। एक शब्द आया है 'विभु'। उस शब्द का टीकाकारों ने इतना बड़ा अर्थ कर दिया कि चारों तरफ संसार में यही बात फैली हुई है कि वो सर्व व्यापक है। वास्तव मे '' विभु '' का अर्थ ये है कि वो विशेष रूप से हर मनुष्य आत्मा के बुद्धि में " भू " माना याद के रूप में अपना स्थान बना लेता है। इस तरह उल्टा अर्थ लगाकर उन्होंने परमात्मा को सर्वव्यापी कह दिया। परमात्मा वास्तव में सृष्टि पर सर्वव्यापी नहीं है। गीता और रामायण भी इस बात के प्रमाण हैं। गीता में, रामायण में लिखा है कि जब–जब इस सृष्टि पर अधर्म का बोल बाला होता है तब–तब मैं आता हूँ। "आता हूँ " से साबित ही हो गया कि वो नहीं था तब तो आया। नहीं तो आने की उसको क्या दरकार थी ? दूसरी बात गीता का श्लोक जो अभी–अभी आपको बताया वो तो पक्का–पक्का साबित कर रहा है कि परमात्मा '' ऊँचा तेरा धाम'' '' ऊँचा तेरा नाम '', '' ऊँचा तेरा काम अर्थात धाम, नाम,काम'' तीनों ही जब ऊँचा है तो वो ऊँचा ही बैठेगा या नीचे बैठेगा? इस दुनियाँ का राजा भी होता है तो वो भी ऊँची गद्दी पर बैठता है। तो हमने परमात्मा को कण–कण में क्यों मिला दिया? दिखाया जाता है कि ऋषि ,मुनि ,सन्यासी भाव विभोर होते हैं तो खड़ताले बजा कर कहते हैं ,'' हे प्रभु हमें दर्शन दो।'' जब प्रवचन करते हैं तो कहते हैं परमात्मा सर्वव्यापी है। ' आत्मा सो परमात्मा ' , ' शिवोऽहम।' हम परमात्मा के रूप हैं। हम ही भगवान हैं। तो ये बात तर्कसंगत साबित

नहीं होती। एक बात पर पक्का रहना चाहिये। ये क्या बात हुई ? कीर्तन करने लगे तो प्रभुजी हमें दर्शन दो। अब दर्शन कहाँ से दें ? तुम्हारे अन्दर खुद ही भगवान बैठा हुआ है। तुम खुद ही भगवान के रूप हो। जो प्रवचन सुनने वाले हैं वो जिस समय गुरूजी महाराज का प्रवचन सुनते हैं तब तो भाव विभोर होकर कहते हैं– '' हाँ परमात्मा सर्वव्यापी है। बहुत अच्छा ज्ञान सुनाया।'' घर में पहुँचते ही भाई–भाई की हत्या करने लगे। अब उन्हें भाई–भाई के अन्दर भगवान नहीं दिखाई दिया। ये एकदम इतना विरोधाभास कैसे पैदा हो गया? वास्तव में सबके अन्दर अपनी–अपनी आत्मा होती है। परमात्मा उनसे अलग है। अपनी भारतीय परम्परा में शंकराचार्य की मेथॉलॉजी अलग है और माधवाचार्य की मेथॉलॉजी अलग। माधवाचार्य की गीता में बताया गया है कि आत्माएं सब अलग– अलग हैं और परमात्मा उनसे अलग और शंकराचार्य की गीता में बताया गया है "सर्वं खलु इदं ब्रह्म" इस दुनियाँ में जो कुछ भी देखने में आ रहा है वो सब परमात्मा का रूप है। माधवाचार्य ने बताया कि हर आत्मा में संस्कार अलग–अलग हैं। आत्मा जब गर्भ में शरीर धारण करेगी तो अपना ही पार्ट बजायेगी। इसका पार्ट दूसरी आत्मा से मिल नहीं सकता। हम हमेशा शास्त्रों में मिसाल देते आये हैं कि हम सब आत्माएं सागर में बुदबुदा हैं। बुदबुदे सब सागर में समा जाते हैं। माने हम उस सागर का अंश हैं। लेकिन एक बात हम भूल गये। अगर हम बुदबुदे हैं, हम सागर के अंश हैं तो सागर में से जो चुल्लू भर पानी हमने ले लिया , उसमें जो खारीपने का गुण होगा वो सागर के पानी में भी गुण होना चाहिये ना? ये पानी हमने उसमें मिला दिया। दोनों का गुण अभी भी एक ही है। लेकिन हमारे सबके अन्दर ये संस्कार अलग –अलग कैसे हैं ? ये अलगाव कहाँ से आ गया? और जन्म जन्मांतर ये अलगाव चलता चला जा रहा है। कभी आपने ये चाहा है कि हमारी आत्मा का अस्तित्व हमेशा के लिये खत्म हो जाय ? कोई चाहता है ? हमारी आत्मा उस सुप्रीम सोल में जाकर लीन हो जाय तो जैसे सागर में चुल्लूभर पानी मिला दिया गया हो तो उसका अस्तित्व हमेशा के लिये खत्म हो जाता है। शास्त्रों में ये बात आती है–" कल्प कल्प लगि प्रभु अवतारा।" जब–जब त्रेतायुग होता है तब–तब राम का अवतार होता है। अजर–अमर तो सभी आत्माएं हैं , वो तो बात ठीक है, वो एक अलग बात। आत्माएं सभी अजर–अमर हैं , उनका अस्तित्व, उन सबका संस्कार अलग–अलग है। लेकिन हर आत्मा का अनेक जन्मों का जो पार्ट हैं जो उस ज्योतिर्बिन्दु रूपी टेप में भरा हुआ है । जब इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर कोई भी आत्मा उतरेगी तो सतयुग के आदि से लेकर कलियुग के अन्त तक उतने ही जन्म लेगी जितना पहले चतुर्युगी में जन्म लिया था। अगर राम की आत्मा होगी तो त्रेतायुग में राम के रूप में जन्म लेगी। "हे कृष्ण नारायण" की आत्मा होगी तो वो सतयुग के आदि में फिर नारायण के रूप में राज्य करेगी। इस तरह हर आत्मा का शरीर रूपी चोला बदलने का अपना पार्ट निश्चित है।

इस प्रकार यह साबित होता है कि आत्मा सो परमात्मा नहीं है। सुप्रीम सोल हमेशा अलग है। वो जन्म–मरण के चक्र में आने लगेगा तो हमको छुड़ाने वाला कोई भी नहीं है। हम आत्माओं से सुप्रीम सोल की तुलना नहीं की जा सकती। हम आत्माएं हीरो पार्टधारी बन सकते हैं , हीरोईन पार्ट धारी बन सकते हैं, हम विलीयन का पार्ट बजा सकते हैं, हम और साधारण आत्माओं का पार्ट बजा सकते हैं लेकिन सुप्रीम सोल जैसा पार्ट किसी का नहीं। वो तो उसका तुरीया पार्ट है। वो बार–बार इस सृष्टि पर आता भी नहीं। जैसा शास्त्रों में लिख दिया है '' संभ्वामि युगे युगे।'' मैं हर युग में आता हूँ। अरे हर युग में आता है तो द्वापर के अन्त में जब कृष्ण के रूप में परमात्मा आया, महाभारत युद्ध कराया, तो क्या पापी कलियुग की स्थापना करने के लिये आया था ? अरे हर युग में आने की क्या जरूरत है? साधारण बाप होता है वो भी तो बच्चों के लिये मकान तब तैयार करता है जब मकान पूरी तरह पुराना हो जाता है, उस पुराने मकान से काम नहीं चलता। जब तक चल सकता है तब तक मरम्मत कराता रहता है। इस सृष्टि रूपी मकान की भी यही हालत है। इब्राहीम, बुद्ध, क्राइस्ट, गुरूनानक आ कर जगह–जगह मरम्मत करते रहे। किसी ने अरब देश में आ कर मरम्मत की, किसी ने युरोपीय देशों में मरम्मत की, किसी ने चीन, जापान में मरम्मत की। आकर मरम्मत की है। नया मकान तो किसी ने नहीं बनाया? नई सृष्टि तो नहीं बनाई? मरम्मत कितने दिन चलेगी? मानवकृत धर्म का थोड़े समय तक प्रभाव रहता है फिर खलास। आख़रीन तो फिर भी उसी सुप्रीम सोल बाप जो धर्म पिताओं का बाप है , बापों का भी बाप है उसको इस सृष्टि पर उतरना ही पड़ता है। वो आ कर इस सृष्टि का आमूल चूल परिवर्तन कर देता है। वो सर्वव्यापी नहीं है। वो तो इस सृष्टि पर मुकर्रर रूप से हीरो पार्टधारी में प्रवेश करके पार्ट बजाता है।
आपने जीसिस का नाम सुना ? क्राइस्ट का नाम सुना? ये दो नाम क्यों ? क्रिश्चियन्स लोग ये मानते हैं कि वो व्यक्ति जो पहले ख्याति प्राप्त नहीं था उसका नाम जीसिस था। फिर जब ख्याति प्राप्त हो गया तब उसका नाम क्राइस्ट पड़ गया। इसका रहस्य कोई नहीं जानता। ये परमात्मा आकर बता रहे हैं कि कोई भी नई आत्मा ऊपर से उतरती है तो जिसमें भी प्रवेश करती है उसका नाम बदल देती है। जैसे पहले नरेन्द्र नाम था। बाद में विवेकानंद नाम पड़ गया। आचार्य रजनीश का भी ऐसे ही हुआ है। पहले ये साधारण लेक्चरर थे। सोल ने प्रवेश किया आचार्य रजनीश नाम पड़ गया। तो हर आत्मा जो ऊपर से नीचे उतरती है वो जिसमें प्रवेश करती है उसको कनवर्ट कर देती है। जिसमें प्रवेश करती है वो भारत की ही सनातन धर्म की आत्मा होती है और प्रवेश कर उसको कनवर्ट कर अपने धर्म में खींच ले जाती है। ऐसे–ऐसे दूसरे–दूसरे धर्मों में कनवर्शन हुआ। भारतवासियों से ही दूसरे–दूसरे धर्म पनपे हैं। कहने का

मतलब ये हुआ कि सुप्रीम सोल की तुलना हम आत्माओं से नहीं हो सकती। हम आत्माओं के मुकाबले वह हमेशा तुरीया है। वह तो सुख भी नहीं भोगता है, दुःख भी नहीं भोगता है। वह सुख–दुःख से हमेशा ही परे रहने वाला है। हाँ, ये बात जरूर है जब इस सृष्टि पर आकर राजयोग सिखाता है तो ऐसी पढ़ाई पढ़ाता है कि हम आत्माएं नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार इस स्टेज को प्राप्त करें कि इस सृष्टि पर रहते हुये भी ,दुःख– सुख में रहते हुए भी अपनी ऐसी स्टेज बना लें कि दुःख के समय में हम दुःखी न हों और सुख के समय में हम प्रसन्न न हों। सामान्य स्थिति। गीता में जिसका नाम '' स्थितप्रज्ञ'' दिया गया। लेकिन वो हमारी अवस्था हमेशा के लिए नहीं रहेगी। उस शिव की हमेशा के लिये रहेगी। वो शिव सुप्रीम सोल है। तो फिर आत्मा परमात्मा एक कहाँ हुए? परमात्मा सर्वव्यापी कहाँ हुआ? सुप्रीम सोल तो हमेशा अलग ही हुआ।

शिव की तुलना ऊँचे ते ऊँचे त्रिदेवों से भी नहीं की जा सकती। इन त्रिदेवों की यादगार में '' झंडा ऊँचा रहे हमारा विजयी विश्व तिरंगा प्यारा। विश्व विजय करके दिखलावे'' ये बोलते तो हैं लेकिन ये नहीं जानते हैं कि वो शरीर रूपी तीन वस्त्र कौन से हैं?जिन तीन वस्त्रों ने सारे विश्व में तहलका मचाया था। विश्व में विजय करके दिखलाई थी। वास्तव में वो तीन शरीर रूपी वस्त्र ब्रह्मा,विष्णु ,शंकर ही हैं। उनके रंग भी वैसे ही दिखाये गये हैं। ऊपर वाला केसरिया है शंकर – क्रान्ति का सूचक। बीच वाला सफेद वस्त्र सत्वगुणी विष्णु का सूचक है , नीचे वाला हरा रंग ब्रह्मा का वस्त्र हैं। गाँधी जी जैसे कहते रहे हैं राम राज्य आयेगा , राम राज्य आयेगा। आ गया रावण राज्य। ऐसे ही ब्रह्मा बाबा हमेशा चिल्लाते रहे रामराज्य लायेंगे। स्वर्ग आयेगा , स्वर्ग आयेगा और स्वर्ग आने ही वाला है। अब उस स्वर्ग की जगह ब्रह्माकुमारी आश्रम में नर्क बन गया। इसीलिए पूजा मूर्तियॉ और मंदिर ब्रह्मा के नहीं होते। तथाकथित ब्रह्माकुमार कुमारियों ने ही ब्रह्मा की दाढ़ी की लाज नहीं रखी जबकि मूर्तियाँ और मंदिर बना कर शंकर और विष्णु की आज सारे भारत में पूजा की जा रही है।
ओमशान्ति।

नोट :– पुराना संस्करण